ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

वर्ष 43 • अंक 169-170 • जनवरी-जून, 2016

A Peer Reviewed Research Quarterly

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

Scanned by CamScanner

Subject	Author	Page No.
गीता का ज्ञानयोग	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'	86-93
सूत्र स्वाध्याय का अधिकारी कौन?	मुनि मदन कुमार	94-99
गाँधी दर्शन में अहिंसा एवं शिक्षा के आयाम	डॉ. जुगल किशोर दाधीच	100-105
शांति स्थापना में वर्तमान शांति शिक्षा का योगदान	डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़	106-110
उत्तराध्ययन सूत्र की कथाओं में निहित मानवीय संवेदना का प्रतिपादन	डॉ. वंदना मेहता	111-119
वनस्पतिकाय का शारीरिक उपकार	समणी ज्योतिप्रज्ञा	120-126
गाँधीवादी चिन्तन में नारी विकास	भारती कंवर	127-136

Scanned by CamScanner

शांति स्थापना में वर्तमान शांति शिक्षा का योगदान

डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़

शांति स्थापना के सहायक तथा बाधक तत्त्व समाज में हमेशा विद्यमान रहते हैं। जहां बाधक तत्व समाज को दूषित करने का प्रयत्न करते हैं वही कुछ ऐसे तत्व भी है जो शक्तिशाली रूप में रहकर अशांति का साम्राज्य आने ही नहीं देते। यही तत्व शांति शिक्षा की नींव है। केवल बौद्धिक गुणों के विकास से ही शांति व युद्धरहित संसार की स्थापना नहीं की जा सकती। इसके लिए शांति व अहिंसा के महत्व को शिक्षा के हर पहलू व हर स्तर पर बढ़ावा देना होगा। चाहे इंजीनियरिंग का विद्यार्थी हो, मेडिकल का, प्रबन्धन का अथवा किसी अन्य शाखा का, सर्वप्रथम उसे एक नैतिक मानव बनाना होगा जिससे कि वह वर्तमान में प्रचलित अमानवीय यातनाओं को याद रखे परन्तु इसलिए नहीं कि उनका बदला आगामी पीढ़ी से लिया जाए, बल्कि इसलिए कि इन घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने पाये। साथ ही अपने क्षेत्र के जनमानस के विकास के लिए समाज में अपनी श्रेष्ठतम भूमिका निभाने में सक्षम हो सके। यह शिक्षा वास्तविक शिक्षा कहलाएगी। जिसका मूल शांति शिक्षा में निहित होगा।

समाज के निर्माण तथा विकास में शिक्षा की भूमिका अहम होती है। समाज का निर्माण व व्यक्ति का निर्माण शिक्षा ही करती है। अतीत में हमारे राष्ट्रीय गौरव का कारण हमारी शिक्षा व संस्कृति का अत्यधिक समृद्ध होना था उसके ही बल पर हमारी पहचान सम्पूर्ण विश्व तक थी। आज हमारी संस्कृति की पहचान लुप्त प्राय हो गई है। यदि शिक्षा में संस्कृति को नहीं समेटा गया तो भावी समाज का स्वरूप अत्यन्त विकृत होगा। इसलिए समस्त सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों को सहजकर शांति शिक्षा से संदर्भित प्रयास करना सामाजिक विकास के संदर्भ में लाभकर होगा।

Scanned by CamScanner

'शांति' शब्द आकारिक दृष्टि से सूक्ष्म होने पर भी महत्व की दृष्टि से इतना विस्तृत है कि सम्पूर्ण विश्व का अस्तित्व ही इस पर निर्भर है। किसी भी कार्य, चाहे वह छोटा हो या बड़ा के संपादन हेतु शांति की भूमिका सर्वप्रमुख मानी जाती है। सर्वशक्ति सम्पन्न होने के बावजूद भी व्यक्ति सुखी नहीं रह पाता तो इसके मूल में शांति का अभाव ही दिखाई पड़ता है। यदि व्यक्ति का मन शांत होता है तो वह बाहरी वातावरण के अशांतिकारक तत्वों को जीत लेता है परन्तु यदि मन ही अशांत हो तो व्यक्ति कर्त्तव्य विमूढ़ता की स्थिति में आकर कई व्यक्तियों को मानसिक रूप से अशांत करते हुए समाज को विकृत कर देता है। अतः शिक्षा के द्वारा आंतरिक शांति के प्रयास करने होंगे। क्योंकि आंतरिक शांति होने पर ही विश्व शांति के प्रयास किये जा सकते हैं।[1]

यद्यपि विश्व विभिन्न भाषाओं व संस्कृतियों का संगम है, तथापि इनकी अभिव्यक्ति का माध्यम बौद्धिक प्राणी ही है। जो अपने विवेक से इन विविधताओं से एकता का सृजन करने की शक्ति रखता है। विविधता के कारण मतभेद उभरना सामान्य बात है। जहां तक ये मतभेद एक स्वस्थ प्रक्रिया के अन्तर्गत वाद-विवादों को जन्म देते हैं, वहां ये समाज के विकास में सहायक होते हैं, परन्तु जहां पर ये मतभेद प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाते हैं, वहां से समाज में हिंसा व अशांति को जीवनदान मिल जाता है।

वर्तमान समाज वैचारिक रूप से सर्वत्र प्रदूषित होता जा रहा है। क्योंकि हमारी शिक्षा भौतिकता पर आधारित हो गई है। शिक्षा के सभी उद्देश्यों को पीछे छोड़ते हुए एकमात्र धनोपार्जन का उद्देश्य शिक्षा पर हावी है, जिस कारण नैतिक मूल्यों का अस्तित्व समाप्ति के कगार पर है समस्या का समाधान हिंसा से खोजने के प्रयास किये जाते हैं। धनबल व बाहुबल-बुद्धिबल पर हावी हो गये हैं तथा सर्वत्र अशांति का साम्राज्य बढ़ा रहे हैं।

प्राचीन शिक्षा का बल नैतिकता पर होने के कारण सामाजिक वातावरण में अशांति लगभग नगण्य हुआ करती थी, क्योंकि अपराधों की संख्या नगण्य थी। आज भौतिकता इतनी हावी है कि अपराधों की शिक्षा दी जाती है और इन्हें रोकने के लिए इतने विभागों को सृजित करने के बाद भी अपराध बढ़ते जा रहे हैं। जिसका कारण यह है कि शांति स्थापना का जटिल कार्य कुछ संस्थाओं द्वारा नहीं किया जा सकता। शांति तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति को इस संदर्भ में जागरूक किया जाए। इसी उद्देश्य को लेकर यह अध्ययन किया गया है।

शांति का तात्पर्य सामंजस्य से है। अशांति वही उत्पन्न होती है जहां सामंजस्य नहीं बन पाता, यह बात दो व्यक्तियों से लेकर विश्व स्तर तक लागू होती है। वर्तमान भौतिकवादी समाज एक कृत्रिम समाज है। जहां छोटी-छोटी बातें विकट समस्या बनकर पनप रही हैं। समस्या का समाधान करने के दो ही मार्ग होते हैं- संघर्ष अथवा सहयोग। धैर्यवान तथा नैतिक दृष्टि से समृद्ध व्यक्ति ही सहयोग का मार्ग अपना सकता है। परन्तु वर्तमान सामाजिक परिवेश में नैतिक मूल्यों के लुप्त होने के कारण ही समाज की मानसिकता इतनी विकृत हो चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति संघर्ष को ही उपर्युक्त समझता है। आतंकवाद, नक्सलवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद इसी के उदाहरण हैं।[2]

Scanned by CamScanner

यद्यपि शांति की समस्या गंभीर है परन्तु ऐसा नहीं है कि इसका समाधान संभव न हो। शांति जीवन की अनिवार्यता है, शांतिपूर्ण वातावरण विकास के सहज अवसर प्रदान करता है। इसलिए इस समस्या को हल करने के प्रयासस्वरूप शांति शिक्षा दी जा सकती है। अशांति के कारण विकृत चिंतन होता है। यह राग-द्वेष, अहंकार, आलस्य जैसे दुर्गुणों के साथ व्यक्ति को पनपने ही नहीं देता।

शांति शिक्षा की आवश्यकता को देखते हुए माना गया है कि युद्ध विरोधी साधनों का विकास व खोज आवश्यक है। इन साधनों का उद्देश्य केवल युद्ध और हिंसा को समाप्त करना ही नहीं है अपितु सभी प्रकार की हिंसा और समाज में सभी स्तरों में शोषण को समाप्त करना है। अहिंसा हिंसा का विरोध मात्र नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की सम्पूर्ण शक्ति है।

शांति शिक्षा का विचार सर्वप्रथम कोमेनियस ने 1667 में अपनी पुस्तक एंजेल ऑफ पीस में रखा था। उसके बाद सभी पाश्चात्य विचारकों ने शांति शिक्षा के प्रति अपने विचारों को प्रतिपादित किया। इसके बाद व्यावहारिक रूप में 20वीं शताब्दी में अमेरिका, रूस व नीदरलैण्ड ने इस शिक्षा को आम जन तक पहुंचाया। शांति शिक्षा का अर्थ शांति बनाये रखने के लिए लोगों को प्रशिक्षण देना। जिसमें मुख्यतः अशांति के खतरों को समझाया और उनको दूर करने के उपाय बताये।

शांति शिक्षा का जो स्वरूप वर्तमान में है उसका विकास द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हुआ है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शांति के प्रति आदर्शों को व्यवहार में लाने हेतु नये संगठनों का उदय हुआ। यूनेस्को ने अन्तर्राष्ट्रीय समझ, सहयोग और शांति के लिए हमेशा प्रयासरत रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय समझ के प्रति घटती आशा के बावजूद परमाणु शस्त्रों के खतरे एवं शांति आंदोलनों के अनुभव इन दो तत्वों ने शांति के इस नये स्वरूप को उजागर किया।

शांति शिक्षा का कार्यक्रम केवल कुछ उच्च वर्ग तक सीमित रहा है तथा यह मानव समूहों तक पहुंचने में असफल रहा है। सम्पूर्ण शांति आंदोलन बौद्धिक व संगठनात्मक दोनों ही स्तरों पर यूरोप केन्द्रित रहा है। तीसरी दुनिया के व्यक्ति, संस्थाएं तथा संगठन परिधि में ही रहे हैं। परमाणु अस्त्र-शस्त्रों का खतरा तथा तीसरी दुनिया में भूख, कुपोषण, अविकास, सामाजिक अन्याय, आतंकवाद आदि मुद्दे अधिक महत्त्वपूर्ण रहे हैं। फलस्वरूप शांति शिक्षा की तरफ लोगों व राष्ट्रों का ध्यान कम गया है।[3]

वर्तमान शिक्षा इन दुर्बुद्धि व दुर्गुणों को दूर करने में असमर्थ है। यही कारण है कि शिक्षित व्यक्ति भी अशांत रहता है। परन्तु यदि शांति के उद्देश्य से ही शिक्षा प्रदान की जाए तो वह शांति स्थापना का एक महत्वपूर्ण उपकरण भी बन सकती है। इसी उद्देश्य से दी गई शिक्षा 'शांति शिक्षा' कहलाती है। जिसके सहारे घरेलू स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक शांति स्थापित की जा सकती है। शांति शिक्षा का उद्देश्य युद्ध के प्रति घृणा तथा शांतिपूर्ण जीवन के प्रति लगाव उत्पन्न करना होना चाहिए। शांति शिक्षा एक बहुआयामी प्रत्यय है। केवल बौद्धिक गुणों के विकास से ही एक शांत युद्धरहित संसार की स्थापना नहीं की जा सकती। वर्तमान भौतिकवादी युग में हमें विवेकानन्द की विचारधारा को लेकर शांति हेतु प्रयास करना

Scanned by CamScanner

है। जिन्होंने कर्मयोग में कहा है कि सच्चा साधक वही है जो कोलाहल में शांति व शांति से कोलाहल का अनुभव करे।

शांति के लिए शिक्षा नैतिक विकास के साथ उन मूल्यों, दृष्टिकोण और कौशलों के पोषण पर बल देती है जो प्रकृति और मानव जगत के बीच सामंजस्य बिठाने के लिए आवश्यक है। इसमें जीने का हर्ष, प्रेम, उम्मीद और साहस के आंतरिक संसाधनों के साथ व्यक्तित्व का सम्मान शामिल है। सामाजिक न्याय शांति शिक्षा का महत्वपूर्ण घटक है। समानता और सामाजिक न्याय जिसमें गरीबों, वंचितों, शोषितों के उत्पीड़न न किए जाने सम्बन्धी दृष्टिकोण पर जोर हो और जिसमें अहिंसा मूलक समाज व्यवस्था के विकास पर जोर हो, उसे शांति शिक्षा का आधार होना चाहिए। इसी तरह, मानव अधिकार शांति की अवधारणा का केन्द्रीय आधार है। अगर लोगों के अधिकारों का हनन हो तो शांति का वातावरण नहीं बना रह सकता। मानव अधिकार की बुनियाद गैर-भेदभावपूर्ण आचरण और समता है जो समाज में शांति की व्यवस्था कायम करने की दिशा में काम करती है। ये मुद्दे आपस में जुड़े हुए हैं, इस प्रकार शांति के लिए शिक्षा, कई मिले-जुले मूल्यों का योग है।

शांति शिक्षा का अर्थ

शांति शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जो लोगों में दया, प्रेम, सहयोग तथा अहिंसा की भावना का सृजन कर एक शांतिपूर्ण एवं विवेकपूर्ण समाज का निर्माण कर सकें। जो व्यक्ति में अर्न्तदृष्टि, ज्ञान व कौशल का विकास करके एक शांत समाज के निर्माण में उसे उसकी भूमिका बताकर सक्रिय योगदान हेतु तत्पर कर सकें, जो विश्वबन्धुत्व का भाव स्थापित कर सके।

गुणा शेखर एवं पाठक (1999) द्वारा उद्धरित बेट्टी रीडन की परिभाषा के अनुसार शांति शिक्षा एक ऐसी व्यवस्था है जिसका प्रयोग वर्तमान समय के विनाश अथवा वर्तमान समाज के सुधार हेतु किया जा सकता है। जिससे कि मानव समाज को अधिक न्यायपूर्ण व अहिंसात्मक बनाया जा सके।[4]

वाटसन (1992) ने शांति की परिभाषा देते हुए लिखा कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में नियम व व्यवस्थाओं का अस्तित्व ही शांति का सूचक है। दो विश्व युद्धों की विभिषिका को ध्यान में रखते हुए शांति शिक्षा का उद्देश्य युद्ध विरोधी आंदोलन के रूप में युद्धविहीन समाज की स्थापना करना है। इसके साथ-साथ मानवाधिकारों की सुरक्षा व उन्नति मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि एवं राष्ट्रीय सत्ता को शक्तिशाली बनाने का उत्तरदायित्व भी शांति शिक्षा पर हो सकता है। पूंजीवादी देशों में इसका उद्देश्य मधुर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की स्थापना करना होगा। जबकि समाजवादी देशों में शांति स्थापना का उद्देश्य आर्थिक, राष्ट्रीय व क्षेत्रीय विकास करना होगा।

हम शांति को युद्ध एवं अणु शस्त्रों के संदर्भ में ही न देखें। शांति जो सभी राष्ट्रों के नागरिकों के लिए सुरक्षा व खुशहाली लाती है। युद्ध के अभाव से कही अधिक।[5]

Scanned by CamScanner

यद्यपि शांति की समस्या गंभीर है, परन्तु ऐसी नहीं कि उसे सुलझाया न जा सके। महावीर और बुद्ध का अहिंसा दर्शन व गांधी की अहिंसा की अवधारणा इसके मुख्य स्रोत बन सकते हैं। सविनय अवज्ञा व असहयोग के रूप में विरोध प्रदर्शन की संकल्पना शांति शिक्षा के फलस्वरूप ही की जा सकती है। एक पक्ष के हिंसक होने पर यदि दूसरा पक्ष भी हिंसक हो जाए तो शांति की संभावनाएं शून्य हो जाती है। परन्तु यदि दूसरा पक्ष शांति बनाए रखे तो अशांति का अंत हो जाता है। शांति स्थापना के सहायता तथा बाधक तत्व समाज में हमेशा विद्यमान रहते हैं। जहां बाधक तत्व समाज को दूषित करने का प्रयत्न करते हैं वहीं कुछ तत्व ऐसे भी हैं जो शक्तिशाली रूप में रहकर अशांति का साम्राज्य आने ही नहीं देते। यही तत्व शांति शिक्षा की नींव है। केवल बौद्धिक गुणों के विकास से ही शांति व युद्धरहित संसार की स्थापना नहीं की जा सकती। इसके लिए शांति व अहिंसा के महत्व को शिक्षा के हर पहलू व हर स्तर पर बढ़ावा देना होगा। चाहे इंजीनियरिंग का विद्यार्थी हो अथवा मेडिकल का, प्रबन्ध का अथवा किसी अन्य शाखा का।

वर्तमान में शांति शिक्षा की आवश्यकता अत्यन्त है क्योंकि आज मानव अत्याधुनिक साधनोंका भोग कर रहा है। वही उसकी अशांति का कारण बन रहे हैं। कुछ समाज सुधारकों ने लिखा है कि ''युद्ध और शांति मनुष्य के मस्तिष्क में पैदा होती है।'' इस वाक्य से ऐसा लगता है कि ये दोनों मनुष्य स्वयं पैदा करता है। इसलिए मनुष्य को अपनी सुख समृद्धि व अस्तित्व को बचाये रखने के लिए शांति का मार्ग चुनना होगा। क्योंकि इस आधुनिक युग में यदि मनुष्य अशांति का शिकार हो गया तो उसके लिए पुनः शांति प्राप्त करना संभव नहीं है।

सन्दर्भ सूची

1. राय, वी.के. सिंह, कृष्णा (1992) पीस एजुकेशन वाट वाई एण्ड हाउ? द एज्यूकेशन रिव्यू, वाल्यूम XLVII No. 7, Page 101-104
2. रायनो, एच. और बेबी एच.ए. (1984) 'पीस एजुकेशन एज ए ट्रेक फॉर टीचर ट्रेनिंग एट द यूनिवर्सिटी, गांधीमार्ग, वाल्यूम 6 नं. 4, 5 पेज 380
3. डॉ. बच्छराज दूगड़, विश्व शांति व अहिंसा प्रशिक्षण, पृ. 69
4. गुना सेखरा, एस. और पाठक, डी.एन. (1992), पीस एजुकेशन : ए कन्टेम्प्रेरी परसप्रेक्टिस : द प्रोग्रेस ऑफ एजुकेशन, पेज 14-19
5. Encyclopedia Americana, New York (1976), p. 439.
6. रीडन, बैटी (1978) 'डिसआर्ममेंट एण्ड पीस एजुकेशन' प्रोसपेक्टस् वाल्यूम 8 नं. 4 पेज 380

सहायक आचार्य

अहिंसा व शांति विभाग

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

Scanned by CamScanner